॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव संकीर्तन

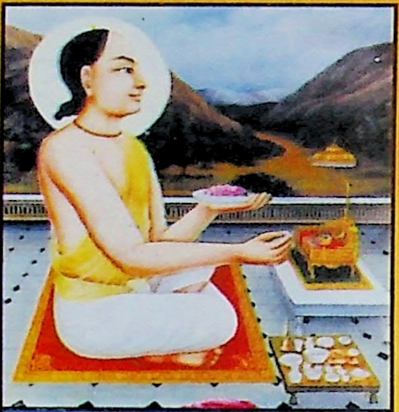

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी
महाराज

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी
महाराज

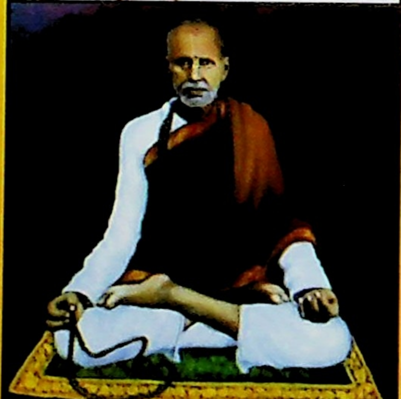

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी
महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव संकीर्तन

प्रकाशक--

वैद्य-बालमुकुन्द एवं बालकिशन इन्दोरिया

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ

जिला-अजमेर (राज०) ३०५८१८

गङ्गा दशहरा

वि० सं० २०६७ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०६

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

१. अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

२. वैद्यप्रवर बालमुकुन्द इन्दोरिया आयुर्वेदाचार्य

निम्बार्कभूषण

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

द्वितीयावृत्ति १०००

मुद्रक--

कम्प्यूटर क्राफ्ट

दुकान नं. 152 के ऊपर, चांदपोल बाजार

जयपुर - 302 001

न्यौछावर

पाँच रुपये

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

* प्राक्कथन *

श्रीनिम्बार्क ग्रन्थ माला का यह पुष्प श्रद्धालु पाठक महानुभावों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष है। अपनी परम वन्दनीया पूज्या माताश्री की चिरस्मृति के लिए उन्हीं के द्वारा निरन्तर गाये जाने वाले पदों व भजनों का संकलन कर श्रीघासीलाल जी शर्मा गौड़ इन्दोरिया एवं उनके उभय आत्मज वै० श्रीबालनमुकुन्दजी शर्मा तथा श्रीबालकृष्णजी शर्मा-गौड इन्दोरिया ने ''श्रीसर्वेश्वर राधामाधव संकीर्तन'' नाम से यह पुष्प प्रकाशित करवाया है। अभी फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी सोमवार दि० ७/२/७७ को आपकी भक्तिमती पुत्रवत्सला माताश्री का गोलोकधाम वास हो गया। मातृस्नेह से आप्लावित आपके हृदय में दुःख का होना स्वाभाविक था। समवेदना और श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने हेतु जब हम श्रीनिम्बार्कतीर्थ उनके आवास स्थान पहुँचे तो श्रीघासीलालजी ने माताश्री के सम्बन्ध में अनेक आश्चर्यमय प्रसङ्ग बतलाये। जिनकी चर्चा उनके जीवन परिचय में की गयी है। साथ ही माताजी द्वारा प्रतिदिनगाये जाने वाले पदों एवं भजनों का ही संकलन रूप में एक लघु पुस्तिका प्रकाशित करने की इच्छा भी प्रगट की। फलस्वरूप प्रस्तुत पुस्तिका का प्रकाशन हुआ है। इसमें पदों भजनों के अतिरिक्त आरती संग्रह एवं मातृवंश तथा पितृवंश का परिचय भी साथ ही प्रकाशित है जिन उभय वंश को अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ को समलंकृत करने वाले आचार्यपादों ने परम पावन बनाया है। अतः परमवन्दनीया माताश्री की पुण्य स्मृति में प्रकाशित यह पुस्तिका प्रतिदिन पठनीय एवं मननीय है।

--पं० गोवन्दिदास 'सन्त' धर्मशास्त्री-द्वैताद्वैत विशारद-पुराणतीर्थ

श्रीनिम्बार्ककोट, पृथ्वीराज मार्ग-अजमेर (राज०)

हृदयोद्गार

इस संसार में जीव संचित कर्मानुसार देव-दानव-मानव आदि में भ्रमण करता रहता है। ''पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्'' के प्रवर्तित चक्र में पड़कर जीव अनन्तानन्त सुख-दुःखों का अनुभव करता है, किन्तु प्रभु जीव पर जिस क्षण कृपा कर उसे अपनाते हैं तब एक सुयोग प्रदान करते हैं और उसी के द्वारा वह पावन-कुल में जन्म लेता है और वहाँ पर सभी प्रकार के सुन्दर साधनों से अनायास अपनी लक्ष्य पूर्ति कर लेता है। अर्थात् प्रभु कृपा-भाजन जीव पुनीत कुल में जन्म लेकर वात्सल्यमयी माँ की गोद में आता है और माँ का वात्सल्य स्नेह प्राप्त कर प्रमुदित होता हुआ अनिर्वचनीय सुख का अनुभव करता है। विधाता ने भी अनेक वात्सल्य स्नेह-सागरों के सार को मन्थन कर उस दिव्य रस-सार को प्राप्त किया और उसी के अनेक बार संसिक्त कर 'माँ' शब्द का निर्माण किया, तब ही तो 'माँ' नाम लेने मात्र से ही आत्मा में एक विलक्षण सुखानुभूति होने लगती है। भगवान् श्रीकृष्ण और बलराम को भी माँ यशोदा, रोहिणी का आशीर्वाद समय-समय पर प्राप्त होता रहता था। यथा--

तयोर्यशोदा रोहिण्यौ पुत्रयोः पुत्रवत्सले ।
यथाकामं यथाकालं व्यधत्तां परमाशिषः ।।

(भा० १०/१६/४४)

और उद्धव के द्वारा सन्देश में भी कहा कि--

''मैय्या ते कहियो हम ऋणियां तिहारे हैं ।''

अर्थात् जीव सबके ऋण से मुक्त हो सकता है किन्तु मातृ-ऋण से मुक्त होना कठिन है। इसी प्रकार हम परम पूज्या राजमाता के ऋण से मुक्त नहीं हो सकते। उनका सारा जीवन भगवद्भक्ति, अतिथि सेवा और परोपकार में ही लीन रहा। स्पष्ट-वादिता एवं दैन्यभाव का तो उनके हृदय में भण्डार ही भरा हुआ था। कभी भी अपने घर पर आये अतिथि का सत्कार किये बिना जाने नहीं देती थी। उनके द्वारा लाखों जीवों का कल्याण हुआ है। श्रीभगवत्परक अनेक कहानियाँ भी कहा करती थीं। वे तीन प्रकार का अद्भुत काजल बनाती थी। फूलकाजल, लगना काजल, और नीम का काजल। इन काजलों से लाखों जीवों का उपकार होता था। हर समय द्वार पर भीड़ लगी रहती थी। बड़े-बड़े डाक्टर से जिन नेत्र रोगों की चिकित्सा नहीं होती थी, वहाँ उनके इस काजल से पूर्ण लाभ होजाता था। आज वे दयामयी माँ हमारे बीच नहीं हैं किन्तु हमें विश्वास है कि श्रीराधारानी के नित्य परिकर में विराजित माँ हमें स्नेहभरी दृष्टि से आशीर्वाद प्रदान कर अनुगृहीत करती रहेगी।

--मुरलीधर शास्त्री
प्रेमसरोवर, गाजीपुर, वरसाना
मथुरा (उ० प्र०)

परम वन्दनीया श्रीमाताजी का

परिचय

जिस कुल में सदाचारी, सद्धर्मपरायण, भगवद्भक्त पुरुष का जन्म होता है उसके पुण्य प्रताप से मातृकुल और पितृकुल दोनों का उद्धार होता है, परन्तु सदाचार सम्पन्नता, सद्धर्मपरायणता, भगवद्भक्त, पतिव्रता, कुलवती नारी का जिस कुल में जन्म हो उसके मातृ-पितृ-भर्तृ इन तीनों कुलों का उद्धार हो जाता है। इसीलिए शास्त्रों में तथा सर्वत्र लोक व्यवहार में भी माता का सम्मान सर्वोपरि माना गया है। मनुष्य सभी प्रकार के ऋण से मुक्त हो सकता है परन्तु मातृ-ऋण से कदापि मुक्त नहीं हो सकता। इसीलिए श्रुति-स्मृति-पुराण आदि शास्त्रों के ''मातृदेवो भव, मातृवान्-पितृवान् आचार्यवान् पुरुषोवेद, उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याश्चशतं पिता। सहस्रंतु पितृन्मातागौरवेणातिरिच्यतते ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव'' इत्यादि वचनों में माता का सर्वप्रथम उल्लेख कितना आदर्शमय है।

हमारे धर्मशास्त्र तो यहाँ तक बतलाते हैं कि 'सर्ववन्देन गतिना प्रसूर्वन्द्याः प्रयत्नतः' यदि पुत्र सन्यास लेता है, दण्ड धारण करता है तो पिता का भी पूज्य और वन्दनीय होता है परन्तु माता को वह सन्यासी पुत्र, दण्ड रख कर स्वयं प्रणाम करे ऐसी हमारी मर्यादा है। कितना गौरव है माता का। भगवान् मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र ने भी 'जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी' कहकर आदर्श मातृ-भक्ति को ही श्रेष्ठ बतलाया है।

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति॥

समर्पणम्

श्रीराधामाधवध्यान-नित्यचित्तपरायणाम् ।
शुद्धां स्वर्णलतां वन्दे मातरं स्नेहमातरम् ॥१॥
सर्वेश्वरप्रभु - प्रेम - नामकीर्तन - तत्पराम् ।
तद्रासलीलयाऽऽनन्द-प्रसन्नां नौमि मातरम् ॥२॥
गोविन्दसत्कथामग्नां सर्वजीवदया - पराम् ।
सर्वदादानशीलाञ्च नित्यं वन्दे पतिव्रताम् ॥३॥
तितिक्षा-करुणा-पूर्णां गोसेवारतमानसाम् ।
पराभक्तिपरां देवीं स्मरामि मातरं सदा ॥४॥

समर्पक :-
मातृस्नेह-भाजनम्
घासीलाल गौड़ः

फाल्गुन कृष्ण अमावस्या
दिनांक १८-२-१९७७

तुलसी विवाहोत्सव के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री का पादार्पण
एवं समीप खड़े माताश्री, श्रीघासीलालजी गौड़, श्रीबैजनाथजी गौड़

श्रीनिम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद निवासी गौड़ वंशावतंस स्व० पं० श्रीरामनाथजी शर्मा इन्दौरिया गौड़ की धर्मपत्नी भक्तिमती श्रीस्वर्णलता (सोनीबाई) का जन्म जयपुर राज्यान्तर्गत हस्तेड़ा नामक ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रीनादानजी गौड़ डोलिया एवं माता का नाम श्रीदाखाबाई था। इसी पवित्र वंश को अपने जन्म से विभूषित करते हुए अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज एवं श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज ने क्रमशः आचार्य परम्परा में ४५ वें तथा ४६ वें पीढी में आचार्यपीठ को अलंकृत किया है। ऐसे परम पवित्र कुल में समुत्पन्न पूज्या माताजी का जीवन आद्योपान्त परम शुद्ध तथा भक्तिमय रहा। अन्यथा अपने उभय पुत्र रत्नों द्वारा क्रमशः प्रवृत्ति एवं निवृत्ति मार्ग को ऐसा उज्ज्वल कैसे बना पाती। एक बार की घटना है--जब आचार्यश्री का जन्म नहीं हुआ था, तब घर में एक सन्त भिक्षा मांगने आये। माताजी ने उन्हें भिक्षा प्रदान की। भिक्षा ग्रहण करते हुए महात्मा ने माताजी को आशीर्वाद दिया-भद्रे ! इसके बाद जो तुम्हारा पुत्र होगा वह विरक्त एवं उच्चपदासीन जगद्गुरु होगा। उन्होंने जब अपनी माताजी से यह बात सुनाई तो माताजी ने कहा, वे तो साक्षात् भर्तृहरि हैं चलो दर्शन करें। दोनों माता-पुत्री दर्शनार्थ चलीं तो कहीं भी उन महात्मा के दर्शन नहीं मिले। राजस्थान में विशेष कर गांवों में आज भी यह मान्यता है कि भर्तृहरिजी भिक्षा मांगने आते हैं।

आपको अभी गत मार्गशीर्ष माससे ही शारीरिक कष्ट प्रारम्भ हुआ जो शरीरान्त तक रहा। उनकी सेवा शुश्रुषा में पुत्री

श्रीगुलाबबाई और पुत्र श्रीघासीलालजी गौड़ तथा अन्य परिवार जनों ने रात दिन एक कर दिया था। सबसे अधिक चिरस्मरणीय सेवा और अनिर्वचनीय उपचार तो वैद्य पं० श्रीलक्ष्मीनारायणजी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य का था जो दिन-रात अपने सारे आवश्यक कार्य छोड़कर माताजी की सन्निधि में रहते थे। अन्य बड़े-बड़े डाक्टरों एवं कुशल वैद्यों ने भी आपकी चिकित्सा की परन्तु उससे उन्हें पूर्ण लाभ नहीं होता था। शास्त्रीजी की सेवा और उपचार से आपको शान्ति मिलती थी। इस प्रकार यद्यपि उन्हें दो मास से असह्य शारीरिक कष्ट था तथापि भगवच्चिन्तन में शिथिलता नहीं आयी। अन्तिम क्षण तक अतीव सचेष्ट रह कर श्रीसर्वेश्वर प्रभु का स्मरण चिन्तन किया। फलतः फाल्गुन कृष्णा ४ सोमवार दिनांक ७/२/७७ को प्रातःकाल उन्हें दो दिव्य महापुरुषों के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। पारिवारिक समस्त मोह उनका निवृत्त हो चुका था। वे परम विशुद्ध हृदया बनी हुई थीं ऐसी स्थिति में उन्होंने आचार्यश्री का स्मरण किया। आचार्यश्री का भी उपर्युक्त मातृभाव से संप्लावित होकर माताश्री के अन्तिम दर्शनार्थ वहाँ पदार्पण हुआ। अपनी सारी अभिलाषायें पूर्ण होने के कारण उनका अन्तःकरण और भी परम निर्मल हुआ और हँसती-हँसती, बोलती-बोलती ही दिव्य पुरुषों के द्वारा निर्दिष्ट अर्चिरादि मार्ग से दिव्य गोलोकधाम वास प्राप्त किया। आपने पूर्ण दीर्घायु प्राप्त की। लगभग ९० वर्ष की अवस्था पूर्ण करके आपने श्रीराधामाधव का सान्निध्य प्राप्त किया। माताजी अपने पीछे प्रवृत्ति मार्ग (गृहस्थाश्रम) में अपना भरापूरा परिवार छोड़ गयी हैं। निवृत्ति मार्ग में तो साक्षात् भगवत्पार्षद

'आचार्यश्री' जैसे पुत्र रत्न प्रदान कर समस्त जगत् का कल्याण किया है।

आपने अपने जीवनकाल में तीनधाम, सप्तपुरी, बद्रीनारायण, केदारनाथ, व्रजयात्रा आदि की तीर्थयात्रा की और अनेक वार श्रीमद्भागवतसप्ताह कथा, रासलीलाएँ आदि करवायीं। भागवती कथा और रासलीला के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। इस वर्ष मार्गशीर्ष मास में श्रीतुलसी विवाह महोत्सव का भव्य आयोजन करवाया जो आपकी आन्तरिक उत्कट अभिलाषा थी। इस अवसर पर भी आचार्यश्री ने माताजी की अभिलाषा को पूर्ण करने हेतु श्रीसर्वेश्वर प्रभु सहित सपरिकर जन्मभूमि में पदार्पण किया। यह आयोजन भी माताजी के अभिलाषानुरूप सानन्द सम्पन्न हुआ। पुण्यमयी माता, परमपावन कुल, देववृन्दवन्दित पवित्र भारत भूमि में जन्म, निरन्तर प्रभु का आराधना, यह दिव्य सौभाग्य अनल्प पुण्य को नहीं प्राप्त होते हैं। हमारे वर्तमान अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज को यह सब कुछ प्राप्त हुआ है। ऐसे महापुरुष ने जिनकी कुक्षि को पवित्र किया उनको अनायास ही भगवान् का सान्निध्य प्राप्त हो जाय तो कौन बड़ी बात है, क्योंकि जिनके दर्शन मात्र से जगत् का कल्याण होता है। अतः ऐसे परमभागवत के जन्म से कुल पवित्र, माता कृतार्थ, वसुन्धरा भाग्यवती स्वर्गस्थ पितृजन भी धन्य-धन्य हो जाते हैं। ऐसे दिव्य भावों को बताने वाला पद्मपुराण का यह वचन कितना मनोहारी है--

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या।

स्वर्गे स्थितास्तत्पितरोऽपि धन्या येषां कुले वैष्णव नामवेयम् ।।

माताजी प्रतिदिन श्रीराधामाधव के चित्रपट की सेवा करती थीं और समस्त उत्सव-महोत्सवों आदि का आयोजन करती रहती थी, माला तो माताजी के हाथ में निरन्तर चलती ही रहती थी। दो वर्ष पूर्व जब आचार्यपीठ अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ उस समय सम्मेलन की साङ्गोपाङ्ग सफलता की कामना से ५ दिन तक माला जपती हुई श्रीसर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना करती थीं कि यह सम्मेलन निर्विघ्न पूर्ण हो। वह निरन्तर जिन पदों का गान एवं महामन्त्र का जप करती रहती थी उन्हीं का इस प्रस्तुत पुस्तिका में संकलन है।

इस प्रकार माताजी का जीवन गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी तपोमय था । उनकी दिव्य आत्मा समस्त वैष्णव जगत् एवं अपने वंश के कल्याण तथा अभिवृद्धि की शुभकामना प्रदान करती रहेगी हम ऐसी प्रार्थना करते हैं।

--वासुदेवशरण उपाध्याय
साहित्य वेदान्त व्याकरणाचार्य
प्राचार्य-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

पुण्यमयी रसरूपा माता।
निशदिन गावत राधामाधव श्रीसर्वेश्वर नाम सुहाता।।
जगद्गुरु श्रीपरशुरामपद-सिद्धपीठ नित दरशन भाता।
तुलसी पूजा व्रत एकादशी तिलक भाल शुभ-मङ्गलदाता।।
गङ्गाजल अरु हरिचरणामृत सेवनव्रत करमाल लुभाता।
वन्दनीय माता अतिपावन दरश शरन हिय रस वरसाता।।१।।

माताश्री का अद्भुत वात्सल्य

पूज्यपाद आचार्य श्रीचरण श्री 'श्रीजी' महाराज वि० सं० २००२ में श्रीवृन्दावन जब श्रीदावानलबिहारी के मन्दिर में अध्ययन कर रहे थे, उस समय व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहान्त श्री धनञ्जयदासजी महाराज तर्क-तर्क तीर्थ (काठिया बाबा) की विशेष देख-रेख थी। कोई भी व्यक्ति बिना श्रीकाठिया बाबा की स्वीकृति लिए आचार्यश्री से नहीं मिल सकता था। उक्त मर्यादा का पालन करते हुए माताश्री लगभग १।। मास तक श्रीवृन्दावन में रहकर अपराह्न में आचार्यश्री जब काठिया बाबा के साथ दैनिक परिभ्रमण को पधारते तब वे दो-दो घन्टे दावानल कुण्ड के घाट से संलग्न परिक्रमा मार्ग पर प्रतीक्षा करती हुई दूर से ही आचार्यश्री को देख लेती और अश्रुपूरित नेत्रों से दैनिक अपने आवास स्थान पर लौट जाती। इस अपूर्व वात्सल्य अनुराग का तब पता चला जब आचार्यश्रीचरण श्रीवृन्दावन से अपना अध्ययन पूर्ण कर वि० सं० २००४ में श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पधारे।

--घासीलाल शर्मा गौड़ इन्दोरिया
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

ममतामयी दादी माताश्री

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर प्रभु श्रीराधामाधव प्रभु श्री श्रीस्वामीजी महाराज व आचार्यश्रीचरणों की असीम कृपा से इस परिवार में जन्म लेना ही मेरा अहोभाग्य है।

मैं जब पांच वर्ष की आयु में प्रथम कक्षा में अध्ययनरत था तब इन्दौर से दादी माँ को पत्र लिखा जिसे लेकर माताश्री श्रीचरणों में लेकर गयी वो क्षण उनके लिए अपार हर्ष का था क्योंकि मुझ से पहले मेरे तीन अग्रज भ्राता एक वर्ष तक की अल्पायु में ही जीवित नहीं रह पाये थे। वो पत्र पढने के बाद माताश्री द्वारा व श्रीचरणों द्वारा मुझे आशीर्वाद मिला तदुपरान्त पिताश्री द्वारा इन्दौर छोड़ देने पर ६ वर्ष की आयु से सत्रह वर्ष की आयु तक अर्थात् ग्यारह वर्ष तक माताश्री का सान्निध्य मिला, उस अन्तराल में माताश्री का जो जीवन चरित देखा उससे में आज भी अभिभूत हूँ। उनका वात्सल्य भाव, करुणा भाव,विवेक दृष्टि स्मरण कर भाव विह्वल हो जाता हूँ।

बालपन में कहानियाँ सुनने की बड़ी उत्सुकता रहती है अतः माताश्री द्वारा अनेक कहानियाँ सुनाई जाती थी हम भाई-बहनों को माताश्री की पीठ सहलाने पर वो कथा प्रसाद मिलता था जिसकी एक अलग ही आनन्द की अनुभूति होती थी। छोटी कहानियों में यथा गोपाल सखा की कहानी गो-बालकों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करती थी तथा बड़ी कहानियाँ यथा रानी सौलंकी,

श्रीघासीलाल शर्मा गौड़ः इन्दौरिया

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ - राजस्थान

भक्तिमती श्री स्वर्णलता

(सोनी बाई) की गोद

में बैठे पौत्र बालमुकुन्द

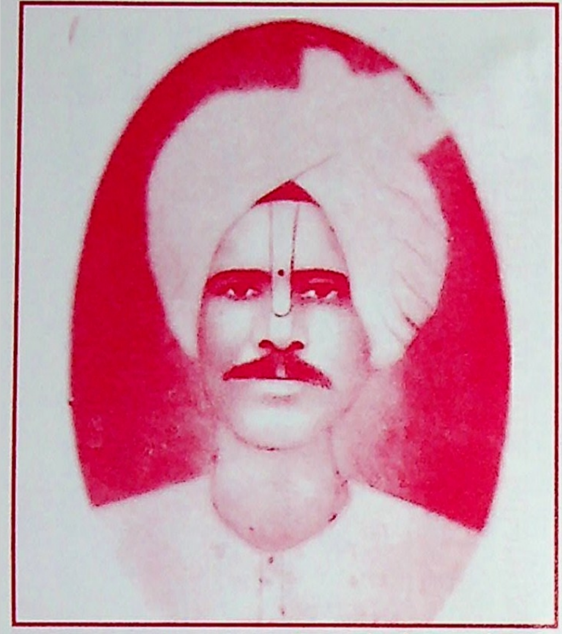

परम पूज्य पं. रामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दौरिया
आविर्भाव :- वि. सं. १९४०,
जन्म स्थान - पूरण की नांगल तहसील-चाकसू (जयपुर)
तिरोभाव :- आश्विन कृष्णा ३ वि. सं. २००४,
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ (राज.)

भक्तिमती श्रीस्वर्णलता (सोनी बाई)
आविर्भाव :- वि. सं. १९४३
तिरोभाव :- फाल्गुन कृष्णा ४ वि. सं. २०३३

गुलाबचंद परवा, शायरनीर की एक-एक कहानी तीन दिन तक श्रृङ्खलाबद्ध होती थी जिसमें करुणा के भाव, निर्णय शक्ति, नैतिक शिक्षा से ओत-प्रोत होती थी।

अतिथि सेवा, परहित मैं जो उन्हें सुख मिलता था व देखते ही बनता था, जब काजल के लिए लोग शाम को घर आते तो पहले नेत्राञ्जन फिर कहानियों द्वारा मनोरंजन फिर जाते-जाते एक सुखद प्रेरणा आभास लेकर लोग घर से जाते थे। ग्रामवासियों के सामने किसी भी समस्या यथा सामाजिक, पारम्परिक रीति-नीति, पारिवारिक समस्या उत्पन्न होती माताश्री से राय लेते थे और उसका समुचित समाधान व निर्णय लोग खुशी-खुशी संतुष्ट होते थे।

नित्य प्रति माताश्री द्वारा श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में तुलसी पत्र लाना, समाधि स्थल पर जाना व नित्य सेवा पूजा करने के बाद स्वामीजी (नालाजी) में जाना होता था। वृद्धावस्था के कारण हम भाई-बहनों में से किसी का कंधा पकड़ कर जाती थी, नालाजी के यहाँ बैठकर जिस भावमुद्रा में वो सबकी मङ्गलकामना करती थी व घर आकर जो आशीर्वचन उनके होते थे वो बार-बार अभी भी स्मरण हो आते हैं।

ऐसी करुणामयी, ममतामयी सर्वजन हितकारिणी दादी माताश्री के चरणों में मेरा शत् शत् नमन।

'निम्बार्कभूषण' वैद्य बालमुकुन्द इन्दौरिया

आयुर्वेदाचार्य

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

स्नेहमयी स्व० राजमाता

आपके गुणानुवाद तो बहुत हैं। मेरी जैसी अल्पमति नारी उनका क्या वर्णन कर सकती है, फिर भी उनके चरणों में रहने का थोड़ा बहुत अवसर मिला है अतः उनके कुछ गुणों का जो मेरे हृदय पटल पर अंकित हैं संक्षेप में वर्णन करती हूँ।

(१) अभी दो वर्ष पूर्व निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ, तो आपको मन ही मन बड़ी चिन्ता होने लगी। उन पाँच दिनों में आपने निद्रा तक नहीं ली, रात-दिन जप स्मरण करती रहीं। मुझे बड़ी चिन्ता हुई, वृद्धावस्था होने से मैंने सहजभाव से पूछ लिया-माताजी आप इन दिनों सो नहीं रही हैं कहीं स्वास्थ्य बिगड़ नहीं जावे, तो कहने लगी-महाराजश्री ने इतने बड़े सम्मेलन का भार उठाया है, श्रीसर्वेश्वर प्रभु ही पार लगाने वाले हैं उन्हीं प्रभु का स्मरण बना हुआ है। सुनकर मेरा हृदय गद्‌गद् होगया। ध्यान गाया-प्यारे श्यामसुन्दर पूर्ण समर्थ हैं, श्रीगिरिराज गोवर्धन पर्वत को उठा लिया है, पर श्रीयशोदा मैया का तो भाव यही है कि सब ग्वाल-बाल मिलकर सहारा लगावें और उधर मन ही मन में भगवान् को भी मना रही हैं। ऐसे ही भाव उन दिनों माताजी के थे।

(२) श्रीरासविहारीजी में आपकी अनन्य निष्ठा थी। सम्मेलन में जिस दिन रङ्गीली होली का मनोरम रास हो रहा था उस दिन अस्वस्थ होते हुए भी कहने लगीं-मुझे वहाँ ले चलो, रासविहारी के दर्शन करूँगी, भेंट करूँगी। पाण्डाल में अपार भीड़ थी, आपकी भी वृद्धावस्था थी। जैसे तैसे बड़ी कठिनता से आपको

लेकर पाण्डाल तक पहुँची, पर रासविहारी के दर्शन नहीं हुए। घबराहट होने लगी, फिर भी आपकी लगन वैसी ही रही। अन्त में जब मञ्च पर ले जाकर आपको दर्शन कराया तब जाकर कहीं प्रसन्न हुई।

(३) जिस प्रकार का भाव श्रीराघवेन्द्र सरकार के प्रति महाराज दशरथजी का वात्सल्य भाव था, वनवास होते समय महाराज दशरथ कहने लगे-प्यारे राम ! मुझे स्वर्ग मिलता हो तो भले ही नरक मिले, पर आप वन को नहीं जावें। ऐसे ही भाव अन्तिम समय में माताजी के रहे। पिछले दिनों आपको बिमारी का भारी कष्ट था। उधर आचार्यश्री का कुम्भ पधारना हो गया, पर लालसा माताजी की बराबर बनी रही कि महाराजश्री के दर्शन मिले। आपकी इच्छा पूरी हुई। महाराजश्री के कुम्भ से पधारने पर दर्शन करके ही परमधाम सिधारीं। ऐसी स्नेहमयी माताजी के चरणों में हमारा बारम्बार प्रणाम है।

चमत्कार पूर्ण घटना

हमारे यहाँ ऐसा कहा जाता है कि जब प्राणी को दाह संस्कार के लिए ले जाते हैं तब उस वक्त थोड़ा आटा फैलाकर थाली उल्टी मार देते हैं, फिर वापस आकर देखते हैं कि प्राणी के कौनसी योनि के चिह्न हुए। इधर जब दाह संस्कार कर वापस आने पर थाली को उठाया तो साक्षात् श्रीचक्रराज के दर्शन हुए। माताजी ने श्रीचक्रराज में लीन होकर श्रीरङ्गदेवी जू के यूथ में पधारकर हमको यह चमत्कार दिखाया। भक्तिमयी मां का यह स्वरूप अलौकिक था। श्रीमहाराज तो आपके प्राण-जीवन-धन थे।

-भगवतदासी लखोटिया, अजमेर

पं० श्रीरामनाथजी शर्मा इन्दौरिया गौड़ का

संक्षिप्त - परिचय

पं. श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ का जन्म आदिगौड़ इन्दौरिया वंश में विक्रम सम्वत् १९४० में हुआ था। आपके पिता का नाम पं. श्रीगंगाबक्षजी शर्मा गौड़ और मातुश्री का नाम श्री गणेशी देवी था।

आप बाल्यकाल से ही सत्सङ्गप्रेमी थे। कथा-कीर्तन-भजन-पूजन-स्मरण आदि-आदि सत्कार्यों में आपकी सहज अभिरुचि रहती थी। आपके उपनयन संस्कार के अनन्तर ही आपका दैनिक सन्ध्योपासन, गायत्री तथा श्रीगोपाल मन्त्रराज के जप आदि का उपासना-क्रम शान्ति पूर्वक आजीवन अनवरत चलता रहा, इसी से आप में स्वाभाविक सारल्य, नम्रता, सादगी, शान्ति,एकान्त प्रियता थी। उपर्युक्त सद्गुणों के कारण ही आप लोकप्रिय थे। यद्यपि आपका अध्ययन सामान्य ही था, किन्तु सभी ग्रामवासी अन्य सम्बन्धी, बन्धु-बान्धव, प्रेमीजन आपको पण्डितजी कह कर पुकारते थे। आपने १९८३ से लेकर १९९५ पर्यन्त निरन्तर श्रीवृन्दावन निवास कर 'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज वृन्दावन तथा अन्य सभी कुञ्जों के व्यवस्थापक का कार्य बड़ी दक्षता से १२ वर्ष पर्यन्त लगातार किया। आपका श्रीयमुना स्नान का दैनिक नियम था और एकादशी-पूर्णिमा आदि विशिष्ट पर्वों पर श्रीवृन्दावन की परिक्रमा का भी आपका नियम रहता था। एक दिन आप ग्रीष्मकाल वैशाख मास में श्रीवृन्दावन की परिक्रमा करते समय श्री 'श्रीजी' के बगीचा में बाबा श्रीगोपालदासजी मुखिया के पास पधारे। रात्रि का समय था, उस समय आपको बगीचे की ही

समीपस्थ लताओं से बंशी की सुमधुर ध्वनि स्पष्ट सुनाई दी। उस मधुर ध्वनि को सुनकर जिधर से वंशी ध्वनि सुनी, उधर खोजा किन्तु कोई भी दिखाई नहीं दिया। अनेक बार खोजने पर वंशी का सुन्दर स्वर तो सुनाई पड़ता किन्तु खोजने पर भी वह वंशी वाला नहीं मिला। उस समय आपके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। आप भाव विभोर होकर प्रभु यश गाने लगे। इस प्रकार की अनेक अनुभूति आपको सहज ही समुपलब्ध हुई थी।

आपका विक्रम सम्वत् १९६० में पं० श्रीनादानजी गौड़ की सुपुत्री श्रीसोनीबाई (स्वर्णलता) देवी के साथ पाणिग्रहण-संस्कार सानन्द सम्पन्न हुआ। आपने अपना गार्हस्थ्य जीवन बड़ी सादगी एवं शान्ति से व्यतीत किया। आपने अपने जीवन में कभी भी वस्त्रादि में साबुन का प्रयोग नहीं किया तथापि आपके वस्त्र सदा-सर्वदा स्वच्छ रहा करते थे।

आपके गार्हस्थ्य जीवन में निम्नाङ्कित सन्तति प्राप्त हुई। प्रथम राजू बाई, रामा बाई, पुक्खीबाई, व्रजकिशोर, गुलाब बाई, श्रीघासीलालजी तथा श्रीरतनलालजी गौड़। जिनमें राजूबाई, पुक्खी बाई, व्रजकिशोर का अल्प समय में ही निधन होगया था। रामाबाई का २८ वर्ष के बाद निधन हुआ था। अब केवल तीन सन्तति अवशिष्ट रहीं। फिर भी आपका स्वल्प परिवार होते हुए भी आपने एक आदर्श त्याग जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। जैसे पूर्वकाल के व्रजवासियों ने श्रीनागाजी महाराज के समक्ष प्रतिज्ञा पत्र समर्पित कर (आधा दूध आधा पूत) की प्रतिज्ञा की थी। उसी भाँति आपने भी शास्त्रीय नियमानुसार अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीघासीलालजी गौड़ को तो गृहस्थ का भार सौंपा और तत्कालीन आचार्यश्री अनन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की सत्प्रेरणा से अपने परम-प्रिय कनिष्ठ पुत्र श्रीरतनलालजी गौड़ को सहर्ष महाराजश्री को समर्पित कर दिया। जो कि वर्तमान अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के स्वरूप में विश्व विदित विराजित हैं। इन वर्तमान आचार्यश्री के पीठासीन होने पर सम्प्रदाय तथा सनातन धर्म का विपुल विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार हुआ है। यह सब आपश्री की तपस्या, अनुपम वैदुष्य तथा दिवंगत दिव्यात्माओं की जन्मान्तरीय साधनाओं का ही प्रत्यक्ष प्रतीक है। श्रीभागवतादि शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख भी है--जैसे--

गुरुर्न स स्यात् स्वजनो न स स्यात् पिता न स स्यात् जननी न सा स्यात्।
दैवं न तस्यान्न पतिश्च सस्यान्नमोचयेद्यः समुपेतमृत्युम्।।

(भा० ५/५/१८)

अर्थात् पिता, माता, गुरु, स्वजन, पति आदि वे ही प्रशस्त हैं जो अपने सम्बन्धित पति पुत्र पौत्रादि को सन्मार्ग में प्रवृत्त कर अपना कर्तव्य पालन करें। इसी नियमानुसार ही पं० श्रीरामनाथजी गौड़ ने भी अपने परम पवित्र देव-दुर्लभ मानव-जीवन का लक्ष्य पूर्ण कर आश्विन कृष्णा ३ सम्वत् २००४ में आपने अपने नश्वर मानव देह का परित्याग कर श्रीयुगलविहारी श्यामा-श्याम के नित्य परिकर में सम्मिलित हो श्रीधाम वास किया।

श्रीमद्भागवतसप्ताह कथा प्रवक्ता निम्बार्कभूषण

--पं० मुरलीधर शास्त्री

प्रेमसरोवर, गाजीपुर, वरसाना, मथुरा (उ० प्र०)

इन्दौरिया गौड़ पितृवंश परम्परा

- श्रीगोपालजी (गृहस्थ)
  - गङ्गाबक्षजी (गृहस्थ)
    - श्यामनाथजी
      - वैंजनाथजी
        - हरिप्रसाद (ब्रजमोहन)
          - गजेन्द्र
            - महेश
            - गुलशन
            - किशन
          - विजय
            - अभिषेक
            - आशीष
          - सुनील
            - सुमित
        - राधामोहन
          - ब्रजभूषण
            - चिन्मय
            - कार्तिकेय
          - अशोक
            - गौरव
          - भारत
            - अभिषेक
            - अभिमन्यु
          - संजय
          - आलोक
        - राधावल्लभ (कुम्भराज)
          - कमलेश
            - राहुल
            - सिद्धार्थ
          - हरीश
        - गिरधारी (गोवर्द्धन)
          - संजय
            - विक्रम
            - करण
          - राजेश
            - युवराज
        - परमानन्द
        - भगवतशरण
          - सर्वेश्वर
        - शङ्कर
          - अमरनाथ
      - रामेश्वरप्रसादजी
        - ओमप्रकाश
          - वरूण
        - सत्यप्रकाश
          - अनुपम
        - ब्रह्मप्रकाश
          - ऋषभ
    - रामनाथजी
      - घासीलालजी
        - बालमुकुन्द
          - सुदर्शन
            - अनन्त
          - श्रीकान्त विरक्त (युवराज श्रीश्यामशरणदेव)
        - बालकृष्ण
          - हरीश
      - पूर्वनाम रतनलालजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी (विरक्त) (वर्तमान अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्य पीठासीन)
  - श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी (विरक्त) (निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर)
  - श्रीलक्ष्मीनारायणजी (गृहस्थ)
    - कल्याणजी
      - महावीरप्रसादजी शास्त्री
        - मनोजकुमार
          - आदित्य
        - गोपाल
      - कमलाप्रसाद
        - रमेश
          - अजय
        - राजेश
          - अरूण
        - राजा
        - बाबूलाल
          - अजीत
        - अशोक
        - योगेन्द्र
        - श्यामसुन्दर
        - जितेन्द्र
    - श्रीहरिकृष्णदासजी (विरक्त)
    - गिरधारीलाल
      - अखिलेश
- चतुर्भुजजी (गृहस्थ)
  - जगन्नाथजी
  - शिवनारायणजी
  - गोविन्ददासजी
- किशनदासजी (विरक्त)
- राधाकिशनजी (विरक्त)

श्रीमातृ-वंश परम्परा

पण्डितप्रवर श्रीरामरतनजी गौड़ डोलिया

- गोविन्दजी विरक्त (अधिकारी)
- हरदेवजी गृहस्थ
  - गङ्गाबक्षजी (गृहस्थ)
    - पार्वती
    - यमुना
    - गोरां
  - श्रीनारायणजी (विरक्त)
  - श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी विरक्त (निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर)
- गोपेश्वरशरणदेवाचार्यजी विरक्त (निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर)
- बलदेवजी गृहस्थ
  - दामोदरजी
    - भँवरलालजी विरक्त
    - चौथमलजी विरक्त (श्रीसर्वेश्वरदासजी)
    - श्यामसुन्दरजी गृहस्थ
      - मोहनलालजी
        - ओमप्रकाश
          - गजानन्द
          - पुलकित
        - कैलाशचन्द्र
          - भगवतीप्रसाद
          - अजय
      - जगदीशप्रसाद
        - घासीलाल
          - राजेन्द्र
            - केशव
          - मुकेश
            - भूपेन्द्र
            - अमन
          - सौरभ
      - मुरलीधरजी
        - नेमीचन्द
          - माधव
      - सत्यनारायणजी
        - प्रदीप
          - तनुष
          - यशराज
  - शिवबक्षजी विरक्त
  - नादानजी
    - धर्मपत्नी श्री दाखां बाई
    - पुत्री सोनी बाई (स्वर्णलता) माताजी
      - घासीलाल गृहस्थ
        - सरस्वती
        - शान्ति
        - प्रेम
        - बालमुकुन्द
          - सुदर्शन
            - राविका
            - अनन्त
          - श्यामा
          - सुधा
          - श्रीकान्त (विरक्त) (युवराज श्रीश्यामशरणदेव)
        - बालकिशन
          - निकेता
          - माधुरी
          - हरीश
        - ललिता
        - बसन्ती
      - रतनलाल (विरक्त) श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी वर्तमान अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन
- भगवानदासजी गृहस्थ
  - सूर्यबक्षजी (विरक्त) (मुखियाजी)
  - लक्ष्मीनारायणजी (गृहस्थ) (नोरा वाली) बिरधी बाई
  - बिहारीदासजी (विरक्त) (अधिकारी)
  - किशनदासजी (विरक्त) (पुजारी)

श्रीवृन्दावन स्थित 'श्रीजी' के बड़े मन्दिर में समायोजित

पूज्य माताजी की पुण्यस्मृति सभा में

श्रद्धाञ्जलियां

(१)

जननी देव पुरुष प्रतापी श्री महाराज जू की,
पावन प्रशंस वंश शोभा सरसानी है।
श्रीराधासर्वेश्वर में अनन्य भक्ति निष्ठा नित्य,
व्रज के सनेह की पताका फहरानी है।
मुदित ''मुकुन्द'' पूर्ण पुण्य को फलित फल,
फाल्गुन मास कृष्णपक्ष चतुर्थी प्रमानी है।
माता स्नेहमयी हरिचरण अनन्य व्रती,
ज्योति रूप व्रजरस लीला में समानी है।
स्वर्ण की लता वे प्रत्यक्ष कल्पतरु बेली,
वात्सल्य सुधा की अपार सिन्धु लहरी।
पूर्व जन्म तप की अनन्त तेजमयी मूर्त्ति,
गुनगन गौरव की साधन सी गहरी।
मुदित ''मुकुन्द'' त्रिभुवन को हरन ताप,
युगल स्वरूप सेवा चाव चित्त चहरी।
ऐसी जननी को पाय धन्य भये श्री महाराज,
जिनके दिव्य यश की पताका छिति छहरी।

-बालमुकुन्द चतुर्वेदी

मथुरा (उ० प्र०)

(२)

पत्नी रामनाथ की सनाथ करिवे को जीव,
''राधासर्वेश्वर'' से सुत उपजा गई।
सुकवि ''गोविन्द'' प्रेम पन्थ को प्रकाश कीनो,
शहर सलेमाबाद सुजस बढ़ा गई।
फाल्गुन को महिना अचारज लिवान आये,
अचरज भारी भयो नित्यधाम धा गई।
राधेश्याम राधेश्याम मुख सों उचारि नाम,
स्वर्णलता माई व्रज रज में समा गई।
लाखा नादान वरदाने भर्त्तरी को आन,
ताही के समान सुत सुजस बढायो है।
सुकवि ''गुविन्द'' गोपी ईश्वर शरण देव,
घनश्याम शरण स्ववंश धन्य भायो है।
अर्चिरादि मारग सों करिके हियो विशुद्ध,
लाखन का आँखन में अंजन अंजायो है।
दो हजार तेतिस में फाल्गुन राधानाम गायो है।

कविरत्न शा० गोविन्द चतुर्वेदी
दादीघाट, मुथरा (उ० प्र०)

(३)

हस्तेड़ा नामके ग्रामे जयपत्तनमण्डले।
देववेदाङ्क चन्द्राब्दे (१९४३) जाता विप्रकुले शुचौ ।।१।।
भूमण्डलस्याचार्याणामन्वये जनिमाप्य सा।
देवी ''स्वर्णलता'' लोके महाभाग्ययुताऽभवत् ।।२।।

पूर्णभूमण्डलाचार्यवर्यो यत्तनयो भुवि।
तद्भाग्यस्य प्रशंसा का क्रियेत भुविमण्डले ।।३ ।।
उच्चविप्रकुले जाता परिणीता तथान्वये।
तादृशं तनयं प्राप्य कृतार्थं जीवनं व्यधात् ।।४ ।।
परमो भगवद्भक्त स्तादृशोच्चपदे स्थितः।
यस्याः सत्तनयो लोके मातृकोटिषु साग्रगा ।।५ ।।
यया स्वजीवनं पूर्णमतिथीनां सुसेवया।
वृद्धया च भगवद्भक्त्या सदाचारेण यापितम् ।।६ ।।
या परा भगवद्भक्त्या युगलोपासने रता।
सुस्पष्टवादिनी चासीद् दैन्येन प्रभुसेविका ।।७ ।।
परोपकारे निरता जनकल्याणकारिणी।
याऽभूद् वात्सल्यपूर्णा च जीवेषु दयया युता ।।८ ।।
कज्जलेनाञ्जयित्वा या नेत्र रोगानदूरयत्।
सहस्रशो मानवानां काऽन्या तत्समतां भजेत् ।।९ ।।
फाल्गुनस्यासिते पक्षे चतुर्थ्यां चन्द्रवासरे।
देव देव खयुग्मेऽब्दे सेहलीलां समापयत् ।।१० ।।
पार्षदावागतौ विष्णोस्तामानेतुं तदा तु द्वौ।
तयोर्गमनसंकेतं प्राप्य सा भुवमत्यजत् ।।११ ।।
नवतिं स्वायुषः पूर्णां कृत्वा या देव मण्डले।
निवासाय जगामाशु तेषां प्रार्थनया सह ।।१२ ।।
माता मातृगुणैः पूर्णा स्नेह मोह दयादिभिः।
कल्याणं कुरुतात्स्वीयभक्तानां हृदये स्थिता ।।१३ ।।
नूनं सा राधिका देव्या नित्ये परिकरे गता।

स्वाशीर्भिः स्नेहपूर्णैश्च स्वकीयान् वर्द्धयिष्यति ।।१४ ।।
मथुरास्थ चतुर्वेद आचार्याणां पुरोहितः ।
नेत्राभ्यामश्रुपूर्णाभ्यामेवं कामयते प्रभुम् ।।१५ ।।

--पं० रघुनाथप्रसाद चतुर्वेदः
एम. ए. साहित्याचार्य
२ दशभुजी गणेश मथुरा वास्तव्यः

(४)

दोहा- जै जै जै मातेश्वरी दरसन अति अभिराम ।
परम भागवत संत प्रिय चरनन कोटि प्रणाम ।।

रसिया- परम पूज्य सुख दाई श्री सोनीबाई ।
भक्ति भागवत वैश्नव सेवा संत रसिकजन भाई ।।
कीने हैं पवित्र मातपितु कुल विप्र दोउ
अद्भुत चरित्र ध्यान गुरु कौ धर्यौ ।
दीर्घ आयु सुखपाय, राधामाधव कूं ध्याय,
जगमोह बिसराय जन्म सुफल कर्यौ ।।

आचारज श्री प्रभु सर्वेश्वर सन्मुख शुभ गति पाई ।।१ ।। पुत्र रत्न दिव्य पायौ, जाकूं गोदी में खिलायौ, मार्ग निवृत्त दिखायौ, कियौ संतन शरण। स्वार्थ अपनौ विसार धर्मशास्त्र कूं विचार, दृढ भक्ति उर धार गहे प्रभु के चरण ।। तवही लैवे संत पधारे, धन्य भाग्य महामाई ।।२ ।। तीर्थ कीने हैं अनेक, रास दरसन की टेक, सत्संग को विवेक, राग द्वेष क्लेश दूर। निम्बार्कतीर्थ पायौ, नित्य प्रभु गुन गायौ, चित निर्मल बनायौ, सब सुख भरपूर ।।

बाकी कहा रह गयौ जगत में लीला मध्य समाई ।।३ ।।
पुत्र भाव बिसराय, अन्नदाता कह्यौ जाय, सोई लीने हैं बुलाय,
कुंभ पर्व ते निकट। अन्त दरसन हू पायौ, काष्ठ हाथ सो पठायौ,
पूर्ण प्रेम हू निभायौ, लागी निश दिन ही रट ।।
तुलसी सालिगराम ब्याह की सुन्दर छटा दिखाई ।।४ ।।
स्वामी जी सों दृढ प्रेम, रह्यौ दर्शन कौ नेम, बैठ चरणन में क्षेम,
पाई महल की टहल कष्ट देह कौ भुलायौ, हँस हरि गुन गायौ,
नित्यधाम अपनायौ, भाव निश्चल अटल।। करौ कृपा मा शरण,
'किशोरी' मिलै भक्ति मन भाई ।।५ ।।

स्वामी कल्याणप्रसाद 'किशोरी'
श्रीवृन्दावन
मथुरा (उत्तरप्रदेश)

श्रीसर्वेश्वर राधामाधव संकीर्तन

संकीर्तन - स्तुति

नव नव रंग त्रिभंगिये, श्याम सु-अङ्गी श्याम।
जय राधे जय हरिप्रिये, श्री राधे सुख धाम।।

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे ।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्री कृष्ण ।।
श्यामा गोरी नित्य किशोरी, प्रीतम जोरी श्रीराधे ।
रसिक रसीलो छैल छबीलो, गुण गर्वीलो श्री कृष्ण ।।
रासविहारिणि रसविस्तारिणि प्रियउरधारिणि श्री राधे ।
नव नवरङ्गी नवल त्रिभङ्गी श्याम सुअङ्गी श्री कृष्ण ।।
प्राण पियारी, रूप उजारी, अति सुकुमारी श्री राधे ।
मैन मनोहर महा-मोदकर सुन्दर-वरतर श्रीकृष्ण ।।
शोभा-श्रेणी मोभा-मैनी कोकिल-बैनी श्री राधे ।
कीरतिवंता, कामनिकंता, श्री भगवन्ता श्रीकृष्ण ।।
चन्दावदनी, कुन्दारदनी, शोभा - सदनी श्री राधे ।
परम उदारा, प्रभा अपारा, अति सुकुमारा श्री कृष्ण ।।
हंसा - गमनी, राजत - रमनी, क्रीड़ा - कमनी श्रीराधे ।
रूप-रसाला, नयन-विशाला, परम-कृपाला श्री कृष्ण ।।
कंचन-वेली, रति-रस-रेली, अति अलवेली श्री राधे ।
सब सुख-सागर, सब गुण-आगर, रूप-उजागर श्री कृष्ण ।।
रमणी - रम्या, तरुतरतम्या, गुण आगम्या श्री राधे ।

धाम-निवासी, प्रभा-प्रकाशी, सहज सुहासी श्रीकृष्ण ।।
शक्त्याह्लादिनि अतिप्रियवादिनि उर-उन्मादिनि श्री राधे ।
अँग-अँग टौना सरस सलौना, सुभग सुठौना श्रीकृष्ण ।।
राधानामिनि गुण अभिरामिनि हरिप्रियास्वामिनि श्री राधे ।
हरे हरे हरि, हरे हरे हरि, हरे हरे हरि श्री कृष्ण ।।

राधा सर्वेश्वर अवतार, हंस रूप श्रुति-मत विस्तार ।।
सनक सनन्दन आदिकुमार जयति सनातन सनतकुमार ।।
श्रीनारदमुनि परम उदार, युगलनामजप करत विहार ।।
राधासर्वेश्वर सुखरास, श्रीनिम्बारक श्रीहरिव्यास ।।
श्रीरङ्गदेवीजू हरिप्रिया पास, युगलकिशोर सदा सुखरास ।।
जय जय श्यामा जय जय श्याम, जय जय श्रीवृन्दावनधाम ।

(१)

मदन गोपाल शरण तेरी आयो ।
चरण कमल की सेवा दीजै, चेरो करि राखो घर जायो ।।
धनि२ मात पिता सुत बन्धु,धनि जननी जिन गोद खिलायो ।
धनि२ चरण चलत तीरथ को,धनि गुरु जिन हरिनाम सुनायो ।।
जे नर विमुख भये गोविन्द सों,जनम अनेक महा दुख पायो ।
'श्रीभट्ट'के प्रभु दियो अभय पद,यम डरप्यो जब दास कहायो ।।

(२)

बसो मेरे नैनन में दोउ चन्द ।
गौर वरन वृषभानु नन्दिनी, श्याम वरन नन्द नन्द ।।
गोलक रहे लुभाय रूप में, निरखत आनन्द कन्द ।
'जैश्री भट' प्रेम रस बन्धन, क्यों छूटे दृढ फन्द ।।

(३)

वृन्दावन इक सुन्दर जोरी।
खेलत जहाँ तहाँ वंशीवट, नंद नँदन वृषभानु किशोरी।।
भुवन चतुर्दश की सुन्दरता, सुन्दर श्याम राधिका गोरी।
'जै श्रीभट' कहाँ लौ बरनौं, रसना एक नाहिं लख कोरी।।

(४)

राधा माधव अद्‌भुत जोरी।
सदा सनातन एक रस विहरत, अविचल नवल किशोर किशोरी।।
नख शिख सब सुषमा रतनागर, भरत रसिकवर हृदय सरोरी।
'जैश्रीभट' कटक कर कुण्डल, गंडवलय मिलि लसत हिलोरी।।

(५)

भींजत कब देखौं इन नैना।
श्यामा जू की सुरङ्ग चूनरी, मोहन को उपरैंना।।
युगल किशोर कुञ्ज तर ठाड़े, यतन कियौ कछु मैंना।
उमड़ी घटा चहुं दिशि 'श्रीभट' जुरि आई जल सैंना।।

(६)

जय जय वृन्दावन रजधानी।
जहाँ विराजत मोहन राजा, श्री राधा सी रानी।।
सदा सनातन इकरस जोरी, महिमा निगम न जानी।
'श्री हरि प्रिया' हितू निज दासी, रहति सदा अगवानी।।

(७)

श्री सर्वेश्वर शरण तिहारी।
सकल नियन्ता करुणा सागर, परम रसीलो मङ्गल कारी।।

सनकादिक नारद मुनि सेवित, श्री निम्बारक हृदय विहारी।
शालगराम स्वरूप विराजत, युगल किशोर नवल वपुधारी।।
आराधित ललितादि सखीजन, शोभित हैं नवकुञ्ज मझारी।
'शरण सदा राधा सर्वेश्वर', मञ्जुल मूरति सोहति प्यारी।।

(८)

जय नन्दनन्दन ! जय सर्वेश्वर !!
श्रीसनकादिक परिसेवित हो, ऋषिवरनारद समुपासत हो।
सकल सृष्टि पालक परमेश्वर, जय नन्दनन्दन जय० ।।
श्रीनिम्बारक आराधित हो, गुञ्जाफल सम अभिराजत हो।
सूक्ष्म रूप में हो निखिलेश्वर जय नन्दनन्दन जय० ।।२।।
परम्परागत परिपूजित हो, शालगराम रुचिर शोभित हो।
राधामाधव ! व्रजविपिनेश्वर ! जय नन्दनन्दन जय० ।।३।।
विमल युगल वपु ललित बने हो, भक्तन हित यह रूप धरे हो।
दया करो हे श्री दीनेश्वर ! जय नन्दनन्दन जय० ।।४।।
श्रीवृन्दावन कुञ्जमधुप हो, नवल केलिरस विलसत नित हो।
रसिकेश्वर ! हे श्री रासेश्वर ! जय नन्दनन्दन जय० ।।५।।
अतुलित करुणा सुधासिन्धु हो, पराभक्ति रस दान कुशल हो।
हे व्रजजीवन ! हे गोपीश्वर ! जय नन्दनन्दन जय० ।।६।।
रसिक हृदय धन सुभग सजे हो, निशिदिन नैंनन युगल बसे हो।
शरण सदा 'राधासर्वेश्वर' जय नन्दनन्दन जय० ।।७।।

(९)

राधामाधव युगल बिहारी।
रास विहारिनि रसिकिनि राधा, माधव रसनिधि रसविस्तारी।।

कवि जयदेव सुसेव्य हमारे, परम पियारे अति सुख कारी।
'शरण सदा राधा सर्वेश्वर', श्री निम्बार्क पीठ विहारी।।

(१०)

निम्बारक आधार हमारे।
चक्र सुदर्शन प्रकट धरातल, आचारज वपु धर्म प्रचारे।।
जन अज्ञान ध्वान्त निरासन, वैष्णवता हरि भक्ति प्रसारे।
विविध कुतर्की शास्त्र विरोधी, अभिमानी निज वचन प्रहारे।।
गिरि गोवर्द्धन निम्बाश्रम में, वसि सर्वेश्वर कंठ हि धारे।
'शरण सदा राधासर्वेश्वर' अरुण महामुनि परम दुलारे।।

(११)

ठाकुर भले विराजे जी श्रीसर्वेश्वर भगवान्-
निम्बारक तीर्थ विराजे जी ।।टेर।।

भक्तजनों पर भई कृपा जब सर्वेश्वर सुखरासी।
मरु भूमि में आन विराजे व्रज भूमि के वासी।।१।।
प्रातःकाल में होत मंगला शृङ्गार आरती न्यारी।
राधा माधव की लख छवि को सुख पावें नरनारी।।२।।
धूनी और नाला के दर्शन करते जो नरनारी।
ईश कृपा से उनकी होवे इच्छा पूरण सारी।।३।।
भादों बद नवमी को होवे नन्द-महोत्सव भारी।
दूर-दूर से यात्री आवें मेला लगे अपारी।।४।।
गजाश्वशाल रथ नोबत खाने और बनी गोशाल।
कहाँ तक वर्णन करूँ वहाँ का मन्दिर बड़ा विशाल।।५।।
अन्य स्थान भी देखन योगु चोर-बावड़ी भारी।

निम्बारक सागर की देखो महिमा अद्भुत न्यारी ।।६ ।।
नित प्रति होत यहाँ पर देखो परमारथ भी भारी ।
विद्या, औषध, पुस्तक, भोजन विविध दान सुखकारी ।।७ ।।
आचार्य चरण के दर्शन करिये जिनकी महिमा भारी ।
'सन्त' सदा भज राधामाधव सर्वेश्वर सुखकारी ।।८ ।।

(१२)

राधामाधव की छवि म्हानें प्यारी लागे ।।टेर ।।
रति पति कोटि लजावत जिनकी,
युगल स्वरूप की छवि आगे ।।राधा माधव।।१ ।।
रूप अनूप महा मन भावन,
जगमग ज्योति सदा जागे।।राधा माधव।।२ ।।
'सन्त' सदा अभिलाष यही मन,
चरण कमल की रति मांगे।।राधा माधव।।३ ।।

(१३)

तेरी बिगड़ी बनावे नन्दलाल भजन कर नित उनका ।।टेर ।।
ध्रुव को जाकर दरश दिखाया
भक्त प्रहलाद को आन बचाया
खंभ फोड़ तत्काल, भजन कर नित उनका ।।१ ।।
द्रुपद सुता का चीर बढाया
ग्राह से गज को तुरत छुडाया
शरणागत प्रतिपाल, भजन कर नित उनका ।।२ ।।
मीरा ने जब हरि गुन गाया
विष को अमृत तुरत बनाया

सब दुःख दीन्हें टाल, भजन कर नित उनका ।।३ ।।

प्रेम से जिसने उन्हें रिझाया

ऊँच नीच सब को अपनाया

ऐसे हैं दीन दयाल, भजन कर नित उनका ।।४ ।।

मुरली मनोहर व्रज पति यादव

'सन्त' सदा भज राधा माधव

छाँडि कपट जंजाल, भजन कर नित उनका ।।५ ।।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की आरती

आरती श्रीसर्वेश्वर की। परम धन रस-रसिकेश्वर की

युगल छवि अति सुन्दर सोहैं ।

रसिक जन दर्शन कर मोहैं ।।

निखिल माधुर्य सिन्धु जो हैं ।

परात्पर पूर्ण ब्रह्म वो हैं ।।

श्यामा श्याम, कृपा के धाम, पूर्ण जन काम,

रुचिर छवि प्रिय प्राणेश्वर की ।

परम धन रस रसिकेश्वर की ।।१ ।।

वृन्दावन निर्मल यमुना नीर ।

सुशोभित सुभग मनोहर तीर ।

बहत जहँ सुन्दर त्रिविध समीर ।

विराजत कदली कुञ्ज कुटीर ।।

सखीजन प्रान, वेणुकल गान करत रस दान,

मधुर छवि व्रज विपिनेश्वर की।
परम धन रस रसिकेश्वर की ।।२।।
ध्येय अज-शिव-मघवादिक के।
सेव्य महरिषि सनकादिक के।।
गेय नारद सुर रिषिवर के।
सेव्य पुनि निम्बारक प्रभु के।।
शालिगराम, कलेवर श्याम, नयन अभिराम,
अतुल छवि निखिल सुरेश्वर की।
परम धन रस रसिकेश्वर की ।।३।।
पीठ निम्बारक आचारज।
विराजत सर्वेश्वर सज धज।
पुष्कर क्षेत्र माँहि अचरज।
परम सुख विलसत है तिन भज।।
करत दरशन, प्रेम वरषन, होत परसन,
विनय ''राधासर्वेश्वर'' की।
परम धन रस रसिकेश्वर की ।।४।।

श्रीराधामाधव प्रभु की आरती

'राधामाधव' युगल वपु सेवित कवि जयदेव।
निम्बारक आचार्यपीठ कृपा करि गिरिदेव ।।१।।
श्री 'श्रीजी' गोविन्दशरण-देवाचार्य महान्।
तिनके अतिशय प्रेमवश राजत पीठ प्रधान ।।२।।

आरती राधामाधव की। मधुर-मुखचन्द्र-सुधार्णव की ।।

विराजत मणिमय-मञ्जुल-कुञ्ज।
मनोरम नवतरु-कुसुम-सुपुञ्ज ।।
खगकुल-कलरव-मधुकर-गुञ्ज।
उपासत सखिजन नित्यनिकुञ्ज ।।

परम कमनीय, अनिरवचनीय, हृदय रमनीय,
दिव्य छवि अनुपम वैभव की।
मधुर-मुखचन्द्र-सुधार्णव की ।।१।।

सेवित रसकवि श्रीजयदेव।
वाञ्छत जिन पदरज मुनि-देव ।।
रसिकजन सो रज नित हि पेव।
पुलकित हो जावे परिसेव ।।

गोवर्द्धन धाम, करत विश्राम सकल जनकाम,
कृपा अति अभिनव केशव की।
मधुर-मुखचन्द्र-सुधार्णव की ।।२।।

पधारे पीठ-निम्बारक धाम।
विराजे कनकपीठ अभिराम।१।
शोभा अमित बनी धन गाम।
दरश कर मुदित सकलजन-वाम ।।

युगल दम्पति, रसिक सम्पति, निखिल जम्पति,
शरण श्रीराधा (सर्वेश्वर) माधव की।
मधुर-मुखचन्द्र-सुधार्णव की ।।३।।

वर्तमान जगद्‌गुरु
निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री 'श्रीजी' महाराज

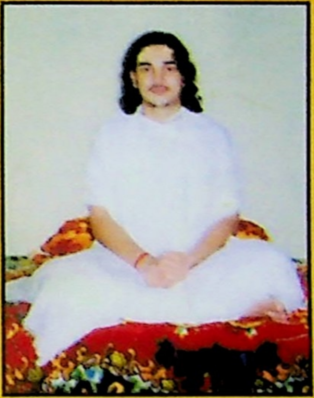

युवराज श्रीश्यामशरणदेवजी

पं. श्रीरामनाथजी गौड़

भक्तिमती स्वर्णलता (सोनीबाई)

Computer Craft